प्रातःक्लास 28/6/68 ओमशान्ति पिताश्री स्वर्ग की बादशाही याद है?

ओमशान्ति। ओमशान्ति कहने से ही बच्चों को जो नॉलेज मिली है वह सारी बुद्धि में आ जानी चाहिए। बाप की भी बुद्धि में है ना। कौन सी नॉलेज है? इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ जिसको कल्प–वृक्ष भी कहते हैं उनकी उत्पत्ति, पालना फिर विनाश कैसे होता है यह तो सारा बुद्धि में आ आना चाहिए। जैसे वह जड़ झाड़ होता है, यह है चैतन्य। बीज भी चैतन्य। उनकी महिमा भी गाते हैं वह सब है चैतन्य है। अर्थात् झाड़ के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझा सकते हैं। अभी वह निराकार कैसे समझावे जब तक कि शरीर न हो। मनुष्य मात्र तो बिल्कुल जानते ही नहीं। कोई की भी ऑक्युपेशन को जानते ही नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा के ऑक्युपेशन को भी जानना चाहिए ना। ब्रह्मा को कोई याद नहीं करते हैं। जानते ही नहीं। अजमेर में ब्रह्मा का मंदिर है। त्रिमूर्ति चित्र छपाते हैं उनमें भी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर है। यह भी कहते हैं ब्रह्मा देवताए नमः। यह तो सभी की बुद्धि में आता है ना। तुम बच्चे जानते हो इस समय ब्रह्मा को देवता नहीं कहा जाता। जब सम्पूर्ण बने तब ही देवता कहा जाये। सम्पूर्ण बन चले जाते हैं सूक्ष्मवतन। यह कौन बैठ सुनाते हैं? बाप कहते हैं पिणे (तुम्हारे बाप) का क्या नाम है? किससे पूछते हैं? आत्मा से। आत्मा कहती है हमारा बाबा जिनको मालूम है कि किसने कहा वह तो प्रश्न पूछ न सके। अभी बच्चे समझ तो गये हैं। बरोबर दो बाप सभी का है भक्ति मार्ग में। फिर ज्ञान मार्ग में शुरू होता है। ज्ञान तो एक बाप ही देते हैं। अभी तुम बच्चे ससझते होंगे यह शिवबाबा का रथ है। बाबा इस रथ द्वारा हमको ज्ञान सुनाते हैं। एक तो यह है जिस्मानी बाप का रथ। फिर रूहानी बाप का भी रथ है। उस रूहानी बाप की ही महिमा है। सुख का सागर है, ज्ञान का सागर है..... पहले–2 तो यह बुद्धि में रहेगा यह बेहद का बाप है, जिससे बेहद का वर्सा मिलता है। पावन दुनियां का मालिक बनते हैं। बुलाते भी; इसलिए हैं हे पतित–पावन आओ। निराकार को ही बुलाते हैं। साकार को नहीं बुलाते और आत्मा ही पुकारती है। अभी आत्मा जानती है वह पतित–पावन बाप इस तन में आया है। यह भूलना न चाहिए। इस समय बाप आये हैं यह है नई बात। शिव जयन्ती भी हर वर्ष मनाई जाती है। तो ज़रूर वह एक बार आते हैं। ल.ना. सतयुग में थे। इस समय नहीं हैं। तो ज़रूर समझना चाहिए इन्होंने पुनर्जन्म लिया होगा। 16 कला से 14 कला, 12 कला में आये होंगे। यह तुम्हारे बिगर दुनियां में और कोई नहीं जानते हैं। तुम जानते हो भारत 16 कला सम्पूर्ण था जबकि इन ल.ना. का राज्य था। तुम बच्चों की बुद्धि में है बरोबर सतयुग में इनका राज्य था और सिर्फ़ भारत ही था। सतयुग को कहा जता है नई दुनियां। वहां सभी कुछ नया ही नया है। देवी–देवता नाम भी कहा जाता है। वही देवताएं जब वाममार्ग में जाते हैं तो फिर उनको नया भी नहीं, तो देवता भी नहीं कह सकते। वाममार्ग में जाते हैं तो पुराने बन जाते हैं। 21 जन्म बाद फिर वाममार्ग में चले जाते हैं। 10 कला से 14 कला, फिर नीचे उतरते जाते हैं। सिर्फ़ उन्हों का पवित्रता की निशानी जो है देवता वह नहीं कह सकते। कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे कि हम उनके वंशावली के हैं। अगर अपन को उस वंशावली के समझते तो फिर उन्हों की महिमा, अपनी निंदा क्यों करते। महिमा जब गाते हैं तो ज़रूर उनको पवित्र, अपन को अपवित्र समझते हैं। बाप ने समझाया है पावन से फिर पतित बनते हैं। पुनर्जन्म भी लेते हैं। जो भी पावन है वह फिर पतित ज़रूर बनते हैं। पहले–2 शुरू में जो पावन था वही फिर पतित बना है। तुम जानते हो पावन सो अभी पतित बने हैं। यह रथ भी पतित है। रथ की कोई महिमा नहीं होती। तुम स्कूल में पढ़ते हो उनमें नम्बरवार फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड क्लास तो होते हैं। अभी बच्चे समझते हैं हमको तो बाप पढ़ाते हैं। तब तो आते हैं ना। नहीं तो यहां आने का क्या दरकार है। यह कोई गुरू, महात्मा, महापुरुष आदि नहीं है। यह तो साधारण मनुष्य तन है, सो भी बहुत पुराना है। बहुत जन्मों के अंत में प्रवेश करता हूँ और तो कोई इनकी महिमा नहीं। सिर्फ़ मैं इस शरीर में प्रवेश करता हूँ। तब ही इनका नाम होता है। नहीं तो प्रजापिता ब्रह्मा कहां से आया? मनुष्य मुँझते तो ज़रूर हैं ना। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। तुमको भी बाप ने समझाया है तब समझा....।

हो। ब्रह्मा का बाप कौन? ब्रह्मा,विष्णु,शंकर है ना। उनका भी बाप ज़रूर होगा। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी नीचे तबके(तब्बके) में हैं ना। ज़रूर कहेंगे इन्हों का रचयिता शिवबाबा ही है। बुद्धि ऊपर चली जाती है। परमपिता परमात्मा जो परमधाम में रहते हैं उनकी यह रचना है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर उन्हों का ऑक्युपेशन अलग–2 है। कोई आपस में 3/4 होते हैं सभी का ऑक्युपेशन अपना–2 होता है। पार्ट हरेक का अपना–2 है। जितने भी 500 करोड़ एक्टर्स हैं आत्माएं तो हैं ना। यह भी समझते हैं एक शरीर न मिले दूसरे से। आत्माएं तो सभी हैं एक जैसे। बाकी शरीर न मिले एक दूसरे से। यह वण्डरफुल बातें समझ जाते हैं। कितने ढेर मनुष्य हैं। अभी चक्र पूरा हुआ है। अंत हैं ना। फिर तुम सतयुग तरफ जावेंगे। फिर से चक्र रिपीट होने का है। बाप यह सभी बातें भिन्न–2 प्रकार से समझाते रहते हैं। नई बात नहीं। कहते हैं कल्प पहले भी समझाया था। बहुत याद करना है। तुम भी बाप के लवली बच्चे हो ना। बाप को याद करते आये हो। पहले तुम एक शिव की ही भक्ति करते थे। फिर व्यभिचारी भक्ति होने कारण तुम्हारी वृत्ति भी नीचे उतरती आई है। पहले सभी एक की पूजा करते थे। भेद–भाव की बात ही नहीं। अभी तो कितना भेद–भाव है। यह राम का भक्त है, यह कृष्ण का भक्त है। राम के भक्त धूप जगाते हैं तो कृष्ण का भक्त नाक बंद कर लेते हैं। ऐसी कुछ बात शास्त्रों में है। वह समझते हैं हमारा देवता बड़ा। वह समझते हैं हमारा कृष्ण देवता बड़ा। वह कहते हैं हमारा भगवान बड़ा। दो भगवान समझ लेते हैं। तो रॉंग होने कारण सभी अनराईटियस ही काम करते हैं। उनको कृष्ण से दुश्मनी, उनको राम से दुश्मनी। दुश्मनी करते–2 क्या नतीजा निकाला है? राम वालों ने राम को बड़ा, कृष्ण को छोटा कर दिया है। राम को त्रेता में, कृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। समझते थोड़े ही हैं कि यह क्या करते हैं। बुद्धि है नहीं। यह बात बाप ही समझाते हैं। भक्ति को कहा जाता है अज्ञान। भक्ति भक्ति है। ज्ञान ज्ञान है। ज्ञान सागर एक ही बाप है। बाकी वह सभी हैं भक्ति के सागर। ज्ञान से सद्गति भक्ति से दुगर्ति होती है। भक्ति के भी सागर हैं। बहुत भक्ति करने वाले हैं। इतने भक्ति में मस्त रहते हैं जो कह देते भगवान का कोई नाम–रूप ही नहीं है। वह पत्थर–भित्तर सभी में है। इतना बिल्कुल ही नीचे गिर पड़ते हैं। भक्ति ने भी कामल(कमाल) की है। यह भी बाप समझाते हैं कि यह कोई नई बात नहीं। अभी तुम हो ज्ञानवान। अपना परिचय बाप ने खुद ही दिया है। सारे इस चक्र का भी परिचय दिया है। जो और कोई दे न सके; इसलिए बाप कहते हैं तुम बच्चे हो स्वदर्शनचक्रधारी। परमपिता तो एक ही है। बाकी सभी बच्चे बच्चे ही हैं। परमपिता अपन को कोई कह न सके। परमपिता तो पुनर्जन्म में आता नहीं। लौकिक बाप को भी परमपिता नहीं कहेंगे। अपन को भी नहीं कहेंगे। यह सन्यासी लोग शिवोहम् कहते हैं तो जैसे कि अपन को परमपिता कहेंगे; परन्तु मनुष्य तो परमात्मा हो न सके। जो अच्छे समझदार मनुष्य हैं वह समझते हैं यह कितना बड़ा ड्रामा है। इनमें जो एक्टर्स हैं वह सदैव पार्ट बजाते ही रहते हैं अविनाशी। वह छोटे–2 नाटक तो विनाश होते हैं। यह है अनादि अविनाशी। कब बंद होने वाला नहीं है। वण्डर है ना। कितनी छोटी आत्मा है उनको कितना बड़ा पार्ट मिला हुआ है शरीर लेने और छोड़ने का और पार्ट बजाने का। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं है। अगर इनको किसी गुरू ने सुनाया होता तो उनके और भी फॉलोअर्स होते ना। सिर्फ़ एक फॉलोअर्स क्या काम का। फॉलोअर्स तो वह जो पूरा फॉलो करे। इनकी ड्रेस आदि तो वह है नहीं। कौन कहेंगे यह शिष्य है? यह तो बाप बैठ पढ़ाते हैं। बाप को ही फॉलो करना है। जैसे बारात होती है ना। शिव की भी बारात कहते हैं। बाबा कहते हैं यह हमारी बारात है। तुम सभी भक्तियां हो, मैं हूँ भगवान। तुम सभी ब्राईड्स हो, मैं हूँ ब्राईड ग्रुम। बाबा आया हुआ है तुम सभी को श्रृंगार कर ले जाने। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी तुम सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को भी जानते हो। और कोई जानते ही नहीं। वह तो सभी नेती–2 कह देते हैं। तो नास्तिक ठहरे ना। जो जानते हैं वह हैं आस्तिक। तुम ब्राह्मणों के सिवाय सारी दुनियां में कोई आस्तिक है नहीं। तुम बाप को याद करते–2 पवित्र बन जाते हो तो पवित्र राजाई मिलती है। बाप समझाते हैं मैं आता हूँ अंत में। मुझे बुलाते ही हो पावन दुनियां की स्थापना करने और पतित दुनियां का विनाश करने

आओ; इसलिए महाकाल भी कहते हैं। महाकाल के भी मंदिर होते हैं। काल की तो देखी। शिव को काल कहेंगे ना। बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ। आत्माओं को ले जाते हैं। बेहद का बाप कितने ढेर को लेने लिए आते हैं। काल–काल महाकाल। सभी आत्माओं को पवित्र गुल–2 बना देते हैं। गुल–2 बन जाये तो फिर बाप भी ले जावेंगे गोद में। अगर पवित्र बनेंगे नहीं तो सज़ा खानी पड़ेगी। फ़र्क तो रहता है ना। पाप रह जाते हैं तो फिर सज़ा भी खानी पड़े और पद भी ऐसा; इसलिए बाप समझाते हैं मीठे–2 बच्चे बहुत ही मीठे बनो। कृष्ण सभी को कितना मीठा लगता है। कितना प्रेम से कृष्ण को झुलाते हैं। ध्यान में कृष्ण को छोटा बच्चा देख गोद में बिठाकर प्यार करते हैं। वैकुण्ठ में चले जाते हैं। वहां कृष्ण को चैतन्य रूप में देखते हैं। भक्ति मार्ग में भी सा. होते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो सचमुच वैकुण्ठ आ रहा है। हम भविष्य में यह बनेंगे। श्रीकृष्ण पर जो कलंक लगाये हैं वह सभी ग़लत हैं। तुम बच्चों को भी शुरू में बहुत सा. हुये थे। फिर पिछाड़ी में भी बहुत करेंगे। ज्ञान कितना रमणीक है। कितनी खुशी रहती है। भक्ति में तो कुछ भी खुशी नहीं रहती है। भक्ति वालों को यह थोड़े ही मालूम रहता है ज्ञान में कितना सुख है। भेंट तो कर न सके। तुम बच्चों को पहले यह नशा चढ़ा रहना चाहिए। यह ज्ञान सिवाय बाप के कोई भी ऋषि, मुनि, सन्यासी आदि दे न सके। भक्ति करते–2 पतित बन पड़े हैं। पतित किसने बनाया? रावण सम्प्रदाय ने। गुरू लोग तो (क)सको मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता बता न सके। एक ही बाप सभी की सद्गति करने वाला है। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ। तुमको ड्रामा का राज़ बैठ बताता हूँ। अभी तुम समझते हो कोई भी मनुष्य गुरू हो नहीं सकता। जो कहे कि आत्माओं बच्चों मैं तुमको समझाता हूँ। बाप को तो बच्चे–2 कहने की ही प्रैक्टिस है। जानते हैं यह हमारी रचना है। यह बाप भी कहते हैं मैं सभी का रचयिता हूँ। तुम सभी भाई–2 हो। उनको पार्ट मिला हुआ है। कैसे मिला है वह बैठ समझाते हैं। सन्यासी तो बता न सके। आत्मा में ही सारा पार्ट भरा हुआ है। जो भी मनुष्य आते हैं 84 जन्मों कब एक जैसे फीचर्स मिल न सके। थोड़ी–2 चेंज ज़रूर होती है। तत्व भी सतो रजो तमो होते जाते हैं। हर जन्म के फीचर्स एक न मिले दूसरे से। यह भी समझने की बातें हैं। बाप रोज़ समझाते रहते हैं मीठे बच्चे बाप में कब भी संशय न लाओ। संशय और निश्चय दो अक्षर है ना। बाप माना बाप। इसमें संशय तो हो न सके। बच्चा कह न सके मैं बाप को याद कर नहीं सकता हूँ। तुम तो घड़ी–2 कहते हो योग नहीं लगता। योग अक्षर ठीक नहीं है। तुम तो राजऋषि हो। राजयोगी नहीं। ऋषि अक्षर पवित्रता का है। तुम हो राजऋषि । ज़रूर पवित्र ही होंगे। थोड़ी बात में फेल होने से फिर राजाई मिल न सके। प्रजा में चले जाते हैं। कितना घाटा पड़ जाता है। नम्बरवार तो पद होते हैं ना। एक का पद न मिले दूसरे से। यह बेहद का बना बनाया ड्रामा है। सिवाय बाप के कोई समझा न सके कि बेहद का ड्रामा कैसे रिपीट होता है। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होती है। जैसे बाप के बुद्धि में सारा ज्ञान है वैसे तुम्हारे बुद्धि में भी है। बीज और झाड़ को समझना है। मनुष्य सृष्टि रूपी बेहद का झाड़ है। इनके साथ बनियन ट्री का मिसाल एक्युरेट है। बुद्धि भी कहती है हमारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म का जो थुर था वह अभी प्रायः लोप हो गया है। बाकी सभी धर्मों की इतनी टार–टारियां आदि खड़ी हैं। ड्रामा अनुसार यह सभी भी होना ही है। ड्रामा में सब नूँध है। इसमें घृणा नहीं आती। नाटक में कब एक्टर्स को घृणा आवेगी क्या? बाप कहते हैं तुम पतित बन गये हो फिर पावन बनना ही है। तुम जितना सुख देखते हो उतना और कोई देख न सके। तुम हीरो–हीरोइन हो। विश्व पर राज्य करने वाले हो। तो अथाह खुशी होनी चाहिए ना। भगवान पढ़ाते हैं। कितना रेगुलर पढ़ना चाहिए। इतनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। राजयोग भी बाप ही सिखलाते हैं। कोई शरीरधारी सिखला न सके। बाप ने आत्माओं को सिखाया है। आत्मा ही धारण करती है। बाप एक ही बार आते हैं पार्ट बजाने। आत्मा ही पार्ट बजाकर एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है। तो अपन को आत्मा समझना चाहिए ना। आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। देवताओं को नहीं पढ़ावेंगे। वहां तो देवताओं को देवता ही पढ़ावेंगे। संगमयुग पर ही बाप पढ़ाते

हैं। पुरुषोत्तम बनने लिए तुम ब्राह्मण पढ़ते हो। यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी एक ही है। तुम जब पुरुषोत्तम बनते हो। सत का संग अभी यह है। सत्य बाबा सत्य बनाने वाला बेहद का बाप एक ही है। सच्चा सत का संग इसको कहा जाता है। संग तारे कुसंग बोरे। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है। टाइम थोड़ा है। शरीर भी भरोसा थोड़े ही है। जो करना है सो कर लेना चाहिए। अज्ञान काल में भी 60 वर्ष के बाद विल करना चाहिए। इनको इतना, इनको इतना सभी हिसाब–किताब पूरा कर जाकर वानप्रस्थी बने। बाप भी कहते हैं जितना पढ़ेंगे–लिखेंगे होंगे नवाब। रुलेंगे–पिलेंगे, पढ़ेंगे नहीं तो उतना ऊँच पद पा नहीं सकेंगे। पढ़ाई रेगुलर ज़रूर चाहिए। पढ़ना है कढ़ना है। फिर खाद निकल जावेगी फिर आत्मा सच्चा सोना बन जावेगी। अभी समय बाकी थोड़ा है। यह है अंतिम जन्म। जो अच्छी रीत पढ़ेंगे तो पद भी पावेंगे। बाप जानते हैं इन बच्चे यह अवगुण है। इनमें भी है। यह बहुतों का कल्याण करते हैं। यह तो फर्स्ट क्लास बच्चे हैं। हज़ारों/लाखों का कल्याण करते हैं। अभी तुम बच्चों को धंधा ही यह है। बाप का मैसेज देना है। दो बाप हैं। एक लौकिक हद का, दूसरा पारलौकिक बेहद का। पारलौकिक बाप कहते हैं मुझे याद करो तो यह वर्सा मिलेगा। भारत को विश्व की बादशाही ज़रूर थी। वहां दुःख का नाम निशान नहीं था। तो इसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना है। व्यापारी वह जो पूरा व्यापार कर दिखावे। गृहस्थ व्यवहार में भी रहो। इसमें रहते पवित्र बनना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। जन्म–जन्मांतर के पाप किये हुये हैं। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति भी बाप बतलाते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे सब पाप कट जावेंगे। तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनते हो सारा ज्ञान बुद्धि में है। और कोई यह ज्ञान दे न सके। तुम बच्चों को बहुत खबरदारा रहना है। यह समझना चाहिए जैसे कर्म हम करेंगे हमको देख और भी करेंगे। मैं नवाबज़ादी हो रहूँगा तो और भी बन जावेंगे। तुम बच्चों को तो बिल्कुल ही साधारण रहना है। नवाबी का ख़्याल अंदर में न आना चाहिए। सभी बीमारियां आदि उतरेंगी योगबल से। विकर्म विनाश होते जावेंगे। आयु भी बड़ी होगी। योग में यह ताकत है। योग के लिए मनुष्य कितना भटकते हरते हैं। तुमसे भी राय पूछते हैं। तुम राय देंगे तो सब जाग पड़ेंगे; परंतु वह अजन समय पर होगा। अभी नहीं जागेंगे। रिवोल्युशन हो जाये। बाबा के पास ढेर आकर इक्ट्ठे हो जाये। बाबा ही तंग हो जावेंगे। यह छिप जावेगा। आगे चल कर तुम देखेंगे क्या होता है। गायन भी है ना अहो प्रभु..... लीला यहां करते हैं। मनुष्य को देवता बनाने की कितनी बड़ी लीला है। क्या होता है आगे चलकर फिर तुम देखेंगे। विनाश भी तो होना ही है। मिरुवा मौत..... जंगल को आग लगनी है। तुम्हारी आत्मा फूल बनती है। तुम्हारे शरीर को आग नहीं लगेगी। बाबा ने कहा है तुम ऐसे बैठे–2 शरीर छोड़ देंगे। समझते हो यह कोई बड़ी बात नहीं। बाप को याद करते–2 चले जाते। वह लोग ब्रह्म को याद करते–2 भी शरीर छोड़ देते हैं। यह कोई बड़ी बात नहीं है। बैठे–2 ध्यान में चले जाते हैं ना। शरीर जड़ हो जाता है तो फिर बैठ न सके। आत्मा चली जाती है। वह बैठते ही ऐसे हैं समझते हैं हम अभी जाते हैं। आत्मा निकल जावेगी। शरीर टेक पर ही रहेगा। तो मनुष्य समझते, ध्यान में बैठा है। हार्टफेल भी बैठे–2 होता है ना। हार्ट फेल का मौत सहज है। तुम भी कहते हो मौत हो तो ऐसा हो। खुशी से अपने घर जाना है। यह बेहद की बात है। बाप कहते हैं तुम्हारी कट निकल जावेगी। फिर तुम ऐसे ही शरीर छोड़ देंगे। बंधन वाला तो यह भी था ना। सभी कुछ था। बाप ने प्रवेश किया तो सभी कुछ दे दिया। झट सौदा कर लिया। बाबा यह सभी कुछ लो। सभी कुछ दे दिया तो राजाई भी ज़रूर मिलेगी ना। सिखलाते हैं बाप के आगे सरेण्डर करो। कोई भूख थोड़े ही मरेंगे। बिल्कुल नहीं। बाप किसको भूख थोड़े ही मारेंगे। शिवबाबा का बन जाने से फिर बुद्धि का ताला भी खुल जाता है। यह सरेण्डर हुआ तो इनका भी ताला खुल गया ना। सभी कुछ बाबा का है। पहले नम्बर वाला ही तो वारी जावेंगे ना। इनको ही आवेगा बाबा से सौदा तो कर लेवें। भूख तो मरना नहीं है। सभी कुछ मिलता रहता है। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।